

संस्कृतम् (केन्द्रिकम्, कोड-सङ्ख्या - 322)

आदर्श-प्रश्नपत्रम्

कक्षा - द्वादशी (2025-26)

अवधि: - होरात्रयम्

अङ्कयोजना उत्तरसङ्केताश्च

पूर्णाङ्काः - 80

अवधातव्यम् -

1. अङ्कयोजनायां प्रदत्तानि उत्तराणि निदर्शात्मकानि सन्ति । प्रदत्तानि उत्तराणि अतिरिच्यापि सन्दर्भानुसारम् अन्यानि उत्तराणि भवितुम् अर्हन्ति ।
2. आन्तरिकविकल्पात्मकेषु प्रश्नेषु यद्यपि स्पष्टतया निर्देशः दत्तः अस्ति यत् केवलं प्रश्नद्वयम् अथवा प्रश्नत्रयम् इत्यादिकम् उत्तरं दातव्यं तथापि यदि छात्रः अतिरिक्त-प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखति तर्हि छात्रहिताय निर्णयः कर्तव्यः । यथा अनुवादकार्ये पञ्चवाक्यानां लेखनम् अभीष्टं परं छात्रः यदि षड् वाक्यानि लिखति तर्हि तत्र केवलं प्रथम-पञ्चवाक्यानां न अपितु यानि वाक्यानि उत्तमानि सन्ति तेषां मूल्याङ्कनं करणीयम् । (अयं नियमः एकादश्यां कक्षायाम् अपि पालनीयः ।)
3. श्लोके नाट्यांशे वा पृष्ठाः प्रश्नाः अवबोधात्मकाः सन्ति । अतः विद्यार्थिनः एतेषु प्रदत्तशब्दानां स्थाने समभाव-पर्यायवाचि-शब्दानां प्रयोगं कर्तुं शक्नुवन्ति । तदर्थम् अङ्काः देयाः । यदि विद्यार्थिनः उत्तरलेखन-समये समुचितानां विभक्तीनां वचनानां च प्रयोगं न कुर्वन्ति तर्हि अंशतः अङ्काः कर्तनीयाः न तु सम्पूर्णाङ्काः ।
4. त्रुटिपूर्णवर्तन्यै व्याकरणात्मक-प्रयोगाय च अनुपाततः अङ्काः कर्तनीयाः न तु सम्पूर्णाङ्काः ।
5. आंशिक-दृष्ट्या समुचितेभ्यः उत्तरेभ्यः अपि अङ्काः देयाः ।
6. रचनात्मक-कार्ये वाक्यरचना प्रमुखा न तु वाक्यसौन्दर्य-तत्त्वम् । अतः आंशिकवाक्यशुद्धये अपि अङ्काः देयाः ।

खण्डः - क

अपठितावबोधनम् - 10 अङ्काः

|    |                                                                                                                                                                                          |       |
|----|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------|
| 1. | अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नानामुत्तराणि संस्कृतेन लिखत -                                                                                                                    | 10    |
|    | (अ) एकपदेन उत्तरत - केवलं प्रश्नद्वयम्                                                                                                                                                   | 2×1=2 |
|    | (i) शिक्षितानाम्<br>(ii) राघवः<br>(iii) स्वाध्याये                                                                                                                                       |       |
|    | (आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत - केवलं प्रश्नद्वयम्                                                                                                                                             | 2×2=4 |
|    | (i) राघवस्य अध्ययनं प्रति एतत् समर्पणम् अनुशासनं च तम् आदर्शच्छात्ररूपेण समाजे प्रतिष्ठापयति ।<br>(ii) सम्पूर्णया संलग्नतया परिश्रमेण च राघवस्य सर्वेषु विषयेषु उत्कृष्टः परिणामः भवति । |       |

|                                                        |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                |        |
|--------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------|
|                                                        | (iii) मित्राणि परिवारसदस्याः प्रतिवेशिजनाः च तस्य सफलतां प्रति गर्वम् अनुभवन्ति ।                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              |        |
|                                                        | (इ) अनुच्छेदस्य समुचितं शीर्षकं लिखत ।<br>आदर्शच्छात्रः, शिक्षिताः बालाः, अध्ययनशीलता ।<br>अन्ये अपि शीर्षकाः भवितुम् अर्हन्ति ।                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                               | 1×1=1  |
|                                                        | (ई) यथानिर्देशम् उत्तरत -                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                      | 3×1=3  |
|                                                        | (i) (ख) प्रोत्साहितः<br>(ii) (ग) राघवः<br>(iii) (क) परिणामः                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                    |        |
| <b>खण्डः - ख</b><br><b>रचनात्मककार्यम् - 15 अङ्काः</b> |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                |        |
| 2.                                                     | भवती सौम्या दिल्ली नगरे वसति । भवती एकस्यां पुस्तक-मेलायां भागं गृहीतवती । तदधिकृत्य सखीं तन्वीं प्रति लिखितं पत्रं मञ्जूषायां प्रदत्तशब्दैः रिक्तस्थानानि पूरयित्वा पुनः लिखतु-                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                               | 10×½=5 |
|                                                        | तिथिः- .....<br>प्रिये सखि (i) तन्वि!<br>सस्नेहं नमो नमः ।<br>अत्र कुशलं तत्रास्तु । सहर्षं संसूचयितुमिच्छामि यद् (ii) गतमासे अहम् उज्जयिन्याम् (iii) आयोजितायाम् एकस्यां विश्वपुस्तक-मेलायां (iv) भ्रमणार्थं गता आसम् । तत्र गत्वा मम व्यैयक्तिकः (v) अनुभवः एव परिवर्तितः । तत्र अनेकेभ्यः स्थानेभ्यः अनेके प्रकाशकाः समागताः आसन् । विविधविषयकानि (vi) पुस्तकानि अपि लभन्ते स्म । तत्रत्यः आकर्षकः दर्शनीयः च विषयः विज्ञान-प्रदर्शनी आसीत् । तस्यां प्रदर्शिन्यां सर्वेपि (vii) विषयाः संस्कृतेन प्रदर्शिताः आसन् । तत् सर्वं दृष्ट्वा (viii) संस्कृतज्ञानं प्रति मम श्रद्धा इतोऽपि वर्धिता । भवतीम् अहं बहु स्मृतवती । यदि भवति अभविष्यत् तर्हि अधिकः (ix) आनन्दः अभविष्यत् । अहं अनेन पत्रेण सह कनचित् पुस्तकानि चित्राणि च प्रेषयामि अवश्यं पश्यतु तेन सर्वम् अवगमिष्यति । शेषं मिलित्वा चर्चयावः । पित्रोः चरणयोः मम (x) प्रणामान् निवेदयतु ।<br>भवदीया सखी,<br>सौम्या |        |
| 3. अ                                                   | अधः प्रदत्तं चित्रम् आधृत्य पञ्चविंशतितः त्रिंशच्छब्दपरिमितैः शब्दैः अनुच्छेदमेकं लिखत -                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                       | 5      |
|                                                        | अत्र छात्रेभ्यः संक्षिप्तवाक्यरचना अपेक्षिता वर्तते । केवलं वाक्यशुद्धिः द्रष्टव्या । अस्य प्रश्नस्य प्रमुखम् उद्देश्यं वाक्यरचना भावप्रकटनं च अस्ति । वाक्यं दीर्घम् अस्ति अथवा लघु इति महत्त्वपूर्णं नास्ति । व्याकरणदृष्ट्या शुद्धतानिमित्तं स्वबुद्ध्या निर्धारणं करणीयम् । मञ्जूषायां प्रदत्ताः शब्दाः सहायतार्थं सन्ति । छात्रः तेषां वाक्येषु प्रयोगं कुर्यादिव इति अनिवार्यं नास्ति ।                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                  |        |

|      |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                               |               |
|------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------|
|      | छात्रः स्वमेधया अपि वाक्यानि निर्मातुं शक्नोति । मञ्जूषायां प्रदत्तानां शब्दानां विभक्तिं परिवर्तनं कृत्वा अपि वाक्यनिर्माणं कर्तुं शक्यते ।                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                  |               |
|      | <b>अथवा</b>                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                   |               |
| आ    | <b>अधः प्रदत्तं विषयम् आधृत्य पञ्चविंशतितः त्रिंशच्छब्दपरिमितैः शब्दैः अनुच्छेदं लिखत-</b>                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                    |               |
|      | अयं विकल्पः सर्वेभ्यः अस्ति । छात्राः मञ्जूषायां प्रदत्तानां शब्दानां विभक्तिं परिवर्तनं कृत्वा अपि वाक्यनिर्माणं कर्तुं शक्नुवन्ति । अतः अङ्काः देयाः । अस्य मूल्याङ्कनाय अन्ये नियमाः चित्रवर्णनस्य अनुगुणं पालनीयाः ।                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                      |               |
| 4. अ | <b>मञ्जूषाप्रदत्त-पदसहायतया अधोलिखितां कथां पूरयत -</b>                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                       | <b>10×½=5</b> |
|      | पुरा हिरण्यकशिपुः (i) नामकः एकः अहङ्कारी बलिष्ठः च (ii) राक्षसराजा अभवत् । सः दैत्यश्चराचरः वर्षसहस्राणि निराहारो ह्यधः शिरः (iii) परिश्रमेण परम-तपसा च ब्रह्मदेवं (iv) प्रसन्नम् कृत्वा वरमयाचत । ततः ब्रह्मा तस्मै विशिष्टं (v) वरम् अयच्छत्- न मनुष्यैः न पशुभिः न दिवा न रात्रौ न गृहे न बहिः न (vi) शस्त्रेण नास्त्रेण च मृयेत । अनेन वरेण हिरण्यकशिपुः अजेयः अभवत् । सः देवताः (vii) पराजित्य सर्वत्र स्वाधिपत्यम् अस्थापयत् । (viii) भगवान् विष्णुः हिरण्यकशिपोः परमशत्रुः आसीत्, यतः विष्णुः (ix) हिरण्यकशिपोः भ्रातरं हिरण्याक्षं हत्वा लोकान् रक्षितवान् । तस्मात् (x) राज्ये सर्वत्र विष्णोः पूजा नामस्मरणं भजनं च तेन निषिद्धम् ।                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                 |               |
|      | <b>अथवा</b>                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                   |               |
| आ    | <b>अधोलिखिते संवादे मञ्जूषायाः सहायतया रिक्तस्थानानि पूरयत -</b>                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              |               |
|      | माधवः - मित्र! भवान् क्रीडनाय वाटिकां न आगच्छत् । अपि गृहे सर्वं कुशलम्?<br>रामः - (i) आम् मित्र! गेहे सर्वं कुशलमेव ।<br>माधवः - तर्हि किमर्थं नागच्छत्?<br>रामः - (ii) वयं गृहे न आस्म, सर्वेऽपि भ्रमणार्थं वाराणसीम् अगच्छाम ।<br>माधवः - अहो! वाराणसीं सर्वे परिवारजनाः अगच्छन् । बहूत्तमम् । किं किं दृष्टम्?<br>रामः - (iii) सर्वप्रथमं तु गङ्गास्नानं कृतं पश्चात् च विश्वनाथदर्शनम् अकुर्म ।<br>माधवः - वाराणस्याः विषये बहुधा श्रुतम् अस्ति । किम् अन्वभत् तत्र भवान्?<br>रामः - आनन्दप्रदं नगरं तत्, सर्वेऽपि तत्र चिन्तारहिताः हरहरमहादेव इति वदन्तः व्रजन्ति ।<br>माधवः - अहो! अद्भुतं खलु तद् दृश्यम् । किं सायङ्कालस्य गङ्गाघटस्य दृश्यम् अवालोकयत्?<br>रामः - (iv) सत्यम्, अद्भुतं दृश्यं भवति तत्र यदा गङ्गारती भवति तदा जनाः सर्वत्र घट्टे उपविश्य आनन्दिताः भवन्ति ।<br>माधवः - सत्यं वदति, अहम् अत्र विवरणं सुत्वैव आनन्दितः भवामि ।<br>रामः - भवान् अपि कादापि गच्छतु यतोहि वस्तुतः दर्शनीयं स्थलं तत् ।<br>माधवः - (v) आम् मित्र! परिवारसदस्यैः सह विमर्शं कृत्वा योजनां करिष्यामि । धन्यवादः ।<br>रामः - स्वागतम्, पुनर्मिलामः राम राम! |               |

| <p style="text-align: center;"><b>खण्ड: - ग</b></p> <p style="text-align: center;"><b>अनुप्रयुक्तव्याकरणम् 20 अङ्काः</b></p> |                                                                                                                                                                                                                                                                                          |       |
|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------|
| 5. अ                                                                                                                         | अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदानां सन्धिं सन्धिच्छेदं वा कृत्वा लिखत-                                                                                                                                                                                                                      | 4×1=4 |
|                                                                                                                              | <p>(क) वेदम् अनूच्य <u>आचार्यः + अन्तेवासिनम्</u> अनुशास्ति ।</p> <p>(ख) <u>शैशवेऽभ्यस्त</u>विद्यानाम् ।</p> <p>(ग) तस्य एव वचनात् <u>भवदभिषेको</u> निवृत्तः ।</p> <p>(घ) अथ क्षणाभ्यन्तरं पुनः स एव <u>पादध्वनिः + अश्रावि</u> इति ।</p> <p style="text-align: center;"><b>अथवा</b></p> |       |
| आ                                                                                                                            | अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदानां सन्धिं सन्धिच्छेदं वा कृत्वा लिखत-                                                                                                                                                                                                                      | 4×1=4 |
|                                                                                                                              | <p>(क) <u>विनिर्मितं छादनम्</u> अज्ञतायाः ।</p> <p>(ख) पुरा धाराराज्ये सिन्धुल-सञ्ज्ञो राजा चिरं प्रजाः <u>परि+अपालयत्</u></p> <p>(ग) कोकिलानां मधुरवचांसि श्रुत्वा कस्य <u>यूनो हृदयम्</u> उत्कण्ठितं न भविष्यति</p> <p>(घ) दया <u>भूतेषु + अलोलुप्त्वं</u> मार्दवं हीरचापलम् ।</p>     |       |
| 6.                                                                                                                           | अधोलिखित-वाक्येषु रेखाङ्कितपदानां समुचितं समस्तपदं विग्रहवाक्यं वा प्रदत्तविकल्पेभ्यः चित्वा लिखत -                                                                                                                                                                                      | 4×1=4 |
|                                                                                                                              | <p>(i) (ख) शासनस्य पश्चात्</p> <p>(ii) (ग) एकं शरीरं तस्मिन्</p> <p>(iii) (क) आकारसदृशप्रज्ञः</p> <p>(iv) (घ) त्रयाणां वर्गाणां समाहारः तम्</p>                                                                                                                                          |       |
| 7.                                                                                                                           | अधोलिखित-वाक्येषु रेखाङ्कितपदेषु प्रकृतिप्रत्ययौ संयोज्य विभज्य वा समुचितं रूपं प्रदत्तविकल्पेभ्यः चिनुत -                                                                                                                                                                               | 4×1=4 |
|                                                                                                                              | <p>(i) (घ) प्रष्टव्याः</p> <p>(ii) (क) विद्या + मतुप्</p> <p>(iii) (ख) अवेक्ष्यमाणे</p> <p>(iv) (ग) वसुमत् + डीप्</p>                                                                                                                                                                    |       |
| 8.                                                                                                                           | समुचितं विभक्तियुक्तं पदं प्रदत्तविकल्पेभ्यः चित्वा रिक्तस्थानपूर्तिं कृत्वा लिखत -                                                                                                                                                                                                      | 4×1=4 |
|                                                                                                                              | <p>(i) (ग) <u>आचार्याय</u> प्रियं धनमाहत्य प्रजातन्तुः मा व्यवच्छेत्सीः ।</p> <p>(ii) हा धिक! (घ) <u>अस्मान्</u> अविज्ञाय उपालभसे ।</p> <p>(iii) (ख) <u>शिवप्रसादेन</u>. भोजः जीवितो भविष्यति ।</p> <p>(iv) (क) <u>भोजनस्य</u> अन्ते वारि विषापहम् ।</p>                                 |       |
| 9. अ                                                                                                                         | वाच्यानुसारं समुचितैः पदैः रिक्तस्थानानि पूरयित्वा अधोलिखितं संवादं लिखत-                                                                                                                                                                                                                | 4×1=4 |
|                                                                                                                              | रामभद्रः - भोः! नारायण! (i) <u>श्यामेन</u> अधुना कुत्र गम्यते?                                                                                                                                                                                                                           |       |

|     |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                      |       |
|-----|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------|
|     | <p>नारायणः - किं न जानासि त्वम्? सः पठनाय (ii) विदेशं गच्छति ।</p> <p>रामभद्रः - तेन गृहं पुनः कदा (iii) आगमिष्यते?</p> <p>नारायण - निश्चयेन अध्ययनं समाप्य एव (iv) सः गृहं प्रत्यागमिष्यति ।</p> <p style="text-align: center;">अथवा</p>                                                                                                                            |       |
| आ   | वाच्यानुसारं समुचितैः पदैः रिक्तस्थानानि पूरयित्वा अधोलिखितानि वाक्यानि लिखत-                                                                                                                                                                                                                                                                                        |       |
|     | <p>(i) किं तेन सः ज्ञायते ?</p> <p>(ii) अहं न जानामि ।</p> <p>(iii) गुरुः सर्वान् शिष्यान् पाठयति ।</p> <p>(iv) शिष्यैः ध्यानेन पाठाः पठ्यन्ते ।</p>                                                                                                                                                                                                                 |       |
|     | <p>खण्डः - घ भागः - I</p> <p>पठितांशावबोधनम् - 25 अङ्काः</p>                                                                                                                                                                                                                                                                                                         |       |
| 10. | अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा तदाधारितान् प्रश्नान् यथानिर्देशं संस्कृतेन उत्तरत -                                                                                                                                                                                                                                                                                      | 5     |
|     | I. एकपदेन उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              | 2×½=1 |
|     | <p>(क) दौवारिकेण/प्रहरिणा</p> <p>(ख) स्कन्धे</p> <p>(ग) तापदुर्गदौवारिकः</p>                                                                                                                                                                                                                                                                                         |       |
|     | II. पूर्णवाक्येन उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)                                                                                                                                                                                                                                                                                                                       | 2×1=2 |
|     | <p>(क) क्षम्यतामेष आगच्छामि, आगत्य च निखिलं निवेदयामि" इति कथयन् द्वादशवर्षेण केनापि भिक्षावटुनानुगम्यमानः कोऽपि काषायवासाः धृततुम्बीपात्रः भव्यमूर्तिः संन्यासी दृष्टः ।</p> <p>(ख) द्वौवारिकः साक्षेपमवोचत्- "क एष मामनुत्तरयन् मुमूर्षुः समायाति बधिरः?</p> <p>(ग) प्रभुवर्याणामादेशो यद् दौवारिकेण प्रहरिणा वा त्रिःपृष्ठोऽपि प्रत्युत्तरमद्दद् हन्तव्यः इति</p> |       |
|     | III. (अ) निर्देशानुसारम् उत्तरत -                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                    | 2×1=2 |
|     | <p>(क) द्वौवारिकः</p> <p>(ख) प्रभुवर्याणाम्</p> <p style="text-align: center;">अथवा</p>                                                                                                                                                                                                                                                                              |       |
|     | <p>(आ) निर्देशानुसारम् उत्तरत -</p> <p>(क) संन्यासी</p> <p>(ख) वदसि</p>                                                                                                                                                                                                                                                                                              |       |
| 11. | अधोलिखितं पद्यांशं पठित्वा तदाधारितान् प्रश्नान् यथानिर्देशं संस्कृतेन उत्तरत -                                                                                                                                                                                                                                                                                      | 5     |
|     | I. एकपदेन उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              | 2×½=1 |
|     | (क) विधात्रा                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                         |       |

|              |                                                                                                                                                                                                                                                                                              |              |
|--------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------|
|              | (ख) मौनम्<br>(ग) विभूषणम्                                                                                                                                                                                                                                                                    |              |
|              | <b>II. पूर्णवाक्येन उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)</b>                                                                                                                                                                                                                                        | <b>2×1=2</b> |
|              | (क) विधात्रा स्वायत्तमेकान्तगुणं मौनं विनिर्मितम्।<br>(ख) सर्वविदां समाजे मौनं विभूषणम्।<br>(ग) अपण्डितानां विभूषणं मौनम्।                                                                                                                                                                   |              |
|              | <b>III. (अ) निर्देशानुसारम् उत्तरत -</b>                                                                                                                                                                                                                                                     | <b>2×1=2</b> |
|              | (क) छादनम्<br>(ख) अपण्डितानाम्<br>अथवा                                                                                                                                                                                                                                                       |              |
|              | (आ) निर्देशानुसारम् उत्तरत -<br>(क) विनिर्मितम्<br>(ख) विधात्रा                                                                                                                                                                                                                              |              |
| <b>12.</b>   | <b>अधोलिखितं नाट्यांशं पठित्वा तदाधारितान् प्रश्नान् यथानिर्देशं संस्कृतेन उत्तरत -</b>                                                                                                                                                                                                      | <b>5</b>     |
|              | <b>I. एकपदेन उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)</b>                                                                                                                                                                                                                                               | <b>2×½=1</b> |
|              | (क) गृहस्थाश्रमप्रयोगशालायाम्<br>(ख) शत्रुजितः<br>(ग) कुण्डला                                                                                                                                                                                                                                |              |
|              | <b>II. पूर्णवाक्येन उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)</b>                                                                                                                                                                                                                                        | <b>2×1=2</b> |
|              | (क) ऋतध्वजः प्रष्टुमुत्सहते यत् किं गन्धर्वराजविश्वासु-महाभागाः अपि स्वपत्नीं युधिष्ठिर इव हारितवन्तः। हरिश्चन्द्र इव विक्रीतवन्तः?<br>(ख) एकस्य अपराधेन सर्वा जातिः दण्ड्या इति मदालसायाः विचित्रो न्यायः।<br>(ग) दुर्लभो जनः ईदृशः यः गृहस्थप्रयोगशालायां स्वपत्न्यै स्वतन्त्रतां दद्यात्। |              |
|              | <b>III. (अ) निर्देशानुसारम् उत्तरत -</b>                                                                                                                                                                                                                                                     | <b>2×1=2</b> |
|              | (क) नारी<br>(ख) स्वतन्त्रताम्<br>अथवा                                                                                                                                                                                                                                                        |              |
|              | (आ) निर्देशानुसारम् उत्तरत -<br>(क) ऋतध्वजाय<br>(ख) अहम्                                                                                                                                                                                                                                     |              |
| <b>13. अ</b> | <b>अधोलिखितस्य पद्यस्य भावार्थं मञ्जूषाप्रदत्तपदैः पूरयित्वा पुनः लिखत -</b>                                                                                                                                                                                                                 | <b>3×1=3</b> |
|              | <b>भावार्थः -</b> राजा दिलीपः ज्ञाने सत्यपि मौनं (i) धारयति, शक्तौ सत्याम् अपि                                                                                                                                                                                                               |              |

|                                                                         |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              |       |
|-------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------|
|                                                                         | (ii) अपराधान् क्षमां करोति, महान्तं त्यागं कृत्वा अपि स्वकीयां (iii) प्रशंसां न करोति । एवं राज्ञः दिलीपस्य गुणाः गुणानुसारित्वात् सहोदराः इव सन्ति ।<br>अथवा                                                                                                                                                                |       |
| आ                                                                       | प्रदत्त-भावार्थत्रयात् शुद्धं भावार्थं चित्वा लिखत-                                                                                                                                                                                                                                                                          |       |
|                                                                         | (i) त्रिविधं नरकस्येदम् ।<br>(ख) नरकस्य द्वारं त्रिविधम् उक्तम् अस्ति ।<br>(ii) मान्धाता च महीपतिः कृतयुगालङ्कारभूतो गतः ।<br>(क) सत्ययुगस्य आभूषरूपः राजा मान्धाता अपि मरणं प्राप्तवान् ।<br>(iii) भूत्यै न प्रमदितव्यम् ।<br>(ग) धनसम्पदैश्वर्याय कल्याणाय च प्रमादः (आलस्यम्) न करणीयः ।                                  |       |
| 14.                                                                     | अधोलिखित- श्लोकस्य प्रदत्ते अन्वये रिक्तस्थानपूर्तिं कुरुत -                                                                                                                                                                                                                                                                 | 3×1=3 |
|                                                                         | अन्वयः- दैवी (i) सम्पत् विमोक्षाय आसुरी (च) (ii) निबन्धाय मता (अतः) पाण्डव ! मा शुचः (यतः) दैवीम् सम्पदम् (iii) अभिजातः असि ।                                                                                                                                                                                                |       |
| 15. अ                                                                   | ‘क’ स्तम्भस्य वाक्यांशस्य ‘ख’ स्तम्भस्य वाक्यांशेन सह मेलनं कुरुत -                                                                                                                                                                                                                                                          | 4×1=4 |
|                                                                         | <p>‘क’ स्तम्भः</p> <p>(क) यस्याः शक्रसमो भर्ता</p> <p>(ख) सेतुर्येन महोदधौ विरचितः</p> <p>(ग) यदि ते कर्मविचिकित्सा</p> <p>(घ) दानं दमश्च यज्ञश्च</p> <p>‘ख’ स्तम्भः</p> <p>(घ) मया पुत्रवती च या ।</p> <p>(ग) कासौ दशास्यान्तकः ।</p> <p>(क) वृत्तविचिकित्सा वा स्यात् ।</p> <p>(ख) स्वाध्यायस्तप आर्जवम् ।</p> <p>अथवा</p> |       |
| आ                                                                       | अधोलिखितेषु वाक्येषु रेखाङ्कितपदानां प्रसङ्गानुसारं शुद्धम् उत्तरं चित्वा लिखत -                                                                                                                                                                                                                                             |       |
|                                                                         | (क) यान्यस्माकं सुकर्माणि तानि त्वयोपास्यानि ।<br>(ख) शरीरे रिपुः प्रहरति हृदये स्वजनस्तथा ।<br>(ग) त्वया भोजो भुवनेश्वरी-अरण्ये रात्रौ हन्तव्यः ।<br>(घ) आसुरीं योनिमापन्ना मूर्खाः जन्मनि जन्मनि ।                                                                                                                         |       |
| <p>खण्डः - घ भागः - ii</p> <p>सामान्यसंस्कृतसाहित्यपरिचयः 10 अङ्काः</p> |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              |       |
| 16.                                                                     | अधोलिखित-प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत- (केवलं प्रश्नत्रयम्)                                                                                                                                                                                                                                                                     | 3×1=3 |
|                                                                         | (क) "श्रीमद्भगवद्गीतायाः" कार्याकार्यव्यवस्थितिः पाठः सङ्कलितः ।<br>(ख) " मातुराज्ञा गरीयसी " इति पाठः प्रतिमानाटकात् सङ्कलितः ।<br>(ग) " पुरन्ध्रीपञ्चकम् " इत्यस्याः रचनायाः लेखिका आचार्यविदेकुमारीघई ।                                                                                                                   |       |

|                        |                                                                                                                                                                                                                                                                                          |       |       |               |                  |                   |          |               |                     |                        |              |  |
|------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------|-------|---------------|------------------|-------------------|----------|---------------|---------------------|------------------------|--------------|--|
|                        | (घ) "नैकेनापि समं गता वसुमती" इत्यस्य पाठस्य सन्दर्भग्रन्थः भोजप्रबन्धः ।                                                                                                                                                                                                                |       |       |               |                  |                   |          |               |                     |                        |              |  |
| 17.                    | मञ्जूषायाः समुचितं पदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत - (केवलं प्रश्नत्रयम्)                                                                                                                                                                                                                 | 3×1=3 |       |               |                  |                   |          |               |                     |                        |              |  |
|                        | (क) महाकाव्ये न्यूनातिन्यूनम् अष्ट सर्गाः भवन्ति । ।<br>(ख) उदिते नैषधे काव्ये क्व माघः क्व च भारविः ।<br>(ग) रघुवंशम् इति महाकाव्यं कालिदासेन विरचितम् ।<br>(घ) सर्गबद्धा रचना महाकाव्यं कथ्यते ।                                                                                       |       |       |               |                  |                   |          |               |                     |                        |              |  |
| 18.                    | समुचितं मेलयित्वा लिखत -                                                                                                                                                                                                                                                                 | 4×1=4 |       |               |                  |                   |          |               |                     |                        |              |  |
|                        | <table><tr><td>भाग क</td><td>भाग ख</td></tr><tr><td>(क) श्रीहर्षः</td><td>(घ) नैषधीयचरितम्</td></tr><tr><td>(ख) प्रतिमानाटकम्</td><td>(क) भासः</td></tr><tr><td>(ग) भरत-मुनिः</td><td>(ख) नाट्य-शास्त्रम्</td></tr><tr><td>(घ) अभिज्ञानशाकुन्तलम्</td><td>(ग) कालिदासः</td></tr></table> | भाग क | भाग ख | (क) श्रीहर्षः | (घ) नैषधीयचरितम् | (ख) प्रतिमानाटकम् | (क) भासः | (ग) भरत-मुनिः | (ख) नाट्य-शास्त्रम् | (घ) अभिज्ञानशाकुन्तलम् | (ग) कालिदासः |  |
| भाग क                  | भाग ख                                                                                                                                                                                                                                                                                    |       |       |               |                  |                   |          |               |                     |                        |              |  |
| (क) श्रीहर्षः          | (घ) नैषधीयचरितम्                                                                                                                                                                                                                                                                         |       |       |               |                  |                   |          |               |                     |                        |              |  |
| (ख) प्रतिमानाटकम्      | (क) भासः                                                                                                                                                                                                                                                                                 |       |       |               |                  |                   |          |               |                     |                        |              |  |
| (ग) भरत-मुनिः          | (ख) नाट्य-शास्त्रम्                                                                                                                                                                                                                                                                      |       |       |               |                  |                   |          |               |                     |                        |              |  |
| (घ) अभिज्ञानशाकुन्तलम् | (ग) कालिदासः                                                                                                                                                                                                                                                                             |       |       |               |                  |                   |          |               |                     |                        |              |  |

-----00000-----